तीस दिन 'क्रूस के चरणों में'
शान्त समय
अप्रैल 2018

INDIAN CHURCH OF CHRIST

परिचय

यह अंक **थोमस और शैला जोन्स द्वारा सम्पादित किताब, "क्रूस के चरणों में तीस दिन"** से लिये गए हैं।

"क्रूस की कथा नाश होनेवालों के लिए मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पानेवालों के लिए परमेश्वर की सामर्थ है" **१कुरून्थियों** १:१८

20शताब्दी पहले परमेश्वर ने वो किया जिसकी अपेक्षा किसी न की थी। वह एक बालक के रूप में जन्मा और क्रूस पर अपनी जान दी। उस समय इसपर विश्वास कर पाना आसान नहीं था। जो यीशु के करीब थे उनके लिये भी इस बात पर विश्वास करना कठीन था। अनेक लोगों के लिये यह केवल एक मूर्खता थी। लेकिन वो जिन्होंने विश्वास किया, वो जिन्होंने बहुत करीब से परखा और निर्णय किया कि विश्वास करने के अच्छे कारण हैं, उनके लिये जीवित परमेश्वर के द्वारा मिला हुआ एक सर्वशक्तिशाली अद्वितीय प्रकाशन था।

यहां जो रहस्य हैं उनकी गहराईयों को कोई नहीं जान सकता, लेकिन हम जितना इसके करीब जाएंगे, उतना ही उत्तम बनते जाएंगे।

यहां पर हमारा यह प्रस्ताव है कि आनेवाले तीस दिन हम इस घटना पर विचार करते हुए बिताएंगे।

परमेश्वर की सहायता से यदि हम यह बेहतर रीति से कर पाएं, तो यह तीस दिन, इन बातों की ओर देखने के दृष्टिकोण और परमेश्वर के सामर्थ की अधिक से अधिक प्रशंसा करने में हमें जीवनभर के लिये बदल देंगे।

यहां पर जो बांटा गया है वह, इस बात को जानने में आपकी भी मदद कर सकता है, कि क्रूस क्यों अब भी परमेश्वर का सामर्थ और ज्ञान है।

अनुक्रमणिका

अध्ययन १ : बिना शर्त के प्रेम - जब हम पापी ही थे
अध्ययन २ : पाप से घृणा - दर्द महसूस करो
अध्ययन ३ : यीशु का लहु - शुध्द करता रहता है
अध्ययन ४ : क्षमा - क्षमा करने की स्वतंत्रता
अध्ययन ५ : बप्तीस्मा - भविष्य में लौटना
अध्ययन ६ : प्रभु भोज - हमेशा याद करना
अध्ययन ७ : ज्ञान - परमेश्वर का ज्ञान और सामर्थ
अध्ययन ८ : घमण्ड - किसे प्रशंसा मिलेगी?
अध्ययन ९ : आत्म-समर्पण - मृत्यू द्वारा जीवन
अध्ययन १०: आत्म त्याग - बिना अफसोस का त्याग
अध्ययन ११: दीनता - दीनता की चरमसीमा तक
अध्ययन १२: जीवन शैली - प्रतिदिन
अध्ययन १३: बलिदान - दर्शक या त्यागी?
अध्ययन १४: दु:ख सहन - समस्या या संभावना?
अध्ययन १५: सेवा - यदि राजा एक सेवक हो
अध्ययन १६: सेवा - आश्चर्यजनक सेवा
अध्ययन १७: दृढ़ संकल्प - आर-पार देखना
अध्ययन १८: सताव - दुराचार लेकिन दु:ख नहीं
अध्ययन १९: काम-काजी दुनिया में - स्थायी प्रभाव
अध्ययन २०: परिवार में - सिर्फ वयस्कों के लिये ही नहीं
अध्ययन २१: परमेश्वर का स्वभाव - उत्तम। बस और कुछ नहीं
अध्ययन २२: विश्वास - परीक्षा के समय विश्वास
अध्ययन २३: खोए हुओं से प्रेम - नीचे मत उतरो
अध्ययन २४: काबू पाना - पासा पलटना
अध्ययन २५: प्रार्थना - प्रार्थना और उद्देश्य
अध्ययन २६: तनाव से निपटना - मैं अकेला नहीं हूँ
अध्ययन २७: पुनरूत्थान - कभी न भूलना

अनुक्रमणिका

अध्ययन २८ : **आनन्द -** आनन्द से चकित न होना

अध्ययन २९ : **मेल मिलाप -** मेल-मिलाप में मग्न

अध्ययन ३० : **एकता -** समानान्तर - एकमन

1 बिना शर्त के प्रेम-जब हम पापी ही थे

रोमियों 5:8 "परन्तु परमेश्वर हम पर अपना प्रेम इस प्रकार प्रकट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसही हमारे लिए मरे।"

जब हमें यह पता चलता है कि हमें कोई प्रेम नहीं करता तो हमें बिलकुल अच्छा नहीं लगता। और जब हमें यह यकिन नहीं होता कि हमे कोई प्रेम करता है या नहीं तब हम ज्यादा बेहतर महसूस नहीं करते। लेकिन जब निश्चित रूप से जब हमें यह मालूम होता है कि हमसे कोई प्रेम करता है तो इस बात से सबकुछ बदल जाता है - जब ऐसा प्रदर्शन हुआ जो यह साबित करता है।

लेकिन, जब हम यह जान जाते हैं कि हमारे लिये यह प्रेम हमारी खूबसूरती, हमारे पैसे या हमारी सफलता के कारण है, तो उन अच्छा महसूस करानेवाले भावनाओं के नीचे कहीं असुरक्षितता छुपी होती है। हम जानते हैं कि जिन बातों के लिये लोग हमें प्रेम करते हैं, यदि दुर्घटना, बीमारी, दिवालियापन, पाप, गलती या असफलता हमसे इन बातों को छीन ले तो हम वो सबकुछ खो देंगे जिसके कारण लोग हमसे प्रेम करते हैं।

जब हम क्रूस के पैरों के पास खड़े होते और परमेश्वर के प्रेम को निहारते हैं, तो उनका बिना शर्त का अविश्सनीय प्रेम दिखाई देता है।

जब हम पापी ही थे - सबसे बुरी परिस्थिती में - तब परमेश्वर ने हमारे लिये क्रूस पर अपने प्रेम को दर्शाया। इनमें से कोई भी बात पाप के प्रती परमेश्वर की कोमलता की गवाही नहीं देते। पाप के प्रति कठोर परमेश्वर से बढ़कर और कोई नहीं-हां बिलकुल और कोई नहीं। लेकिन, फिर भी,यह उस बात की गवाही है कि परमेश्वर का प्रेम कितना चौड़ा, लम्बा, ऊंचा और गहरा है यह उस बात की गवाही है। **(इफिसियों 3:18)**

क्रूस यह स्थापित करता है कि एक परमेश्वर है; वह प्रेम है; उनका प्रेम बिना शर्त का है। कोई भी बात जो हम करें या ना कर पाएं; उन्हें हमसे प्रेम करने से नहीं रोक सकता।

आज यह बात आपके लिये क्या मायने रखती है?

जब आप परमेश्वर के दुश्मन थे तब परमेश्वर ने आप से प्रेम किया, तो अब इसका अर्थ क्या है, क्या आप उनके बच्चे हैं?

यदि परमेश्वर ने पिछले वर्ष जब आप परमेश्वर के कामों में उन्नति कर रह थे तब आपसे प्रेम किया और इस वर्ष "आत्मिक सूखा" पड़ा है तो इसका अर्थ क्या है कि आप खतरा महसूस कर रहे हैं?

क्रूस के पास परमेश्वर के बारे में मैं जान पाता हूँ, क्या उन बातों को मैं अपने मन और अपने हृदय में रखता हूँ?

जिस तरह परमेश्वर आपसे निपटते हैं क्या आप भी उसी तरह दूसरों से निपटते हो?**(यूहन्ना 4:11)**

आगे के अध्ययन के लिये: भ.सं.32, मत्ती 18:23-35; लूका 15:11-32; यूहन्ना 3:16-18; इफिसियों 2:1-10**.**

2 पाप से घृणा-दर्द महसूस करो

1पतरस 2:24 "वह स्वयं हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया जिससे हम पापों के लिये मर जाएं और धार्मिक्ता के लिये जीवन बिताएं।"

जब क्रूस की बात आती है-तो क्रूस का दर्द महसूस करो। इस बात को समझो कि क्रूस का सबसे महत्वपूर्ण सच है वो पाप - आपका और मेरा पाप - जो परमेश्वर को दु:ख पहुंचाता है।

यही वो सच्चाई है जिसे मेरे बचाए जाने से पहले मुझे पूरी तरह से जानना और महसूस करना है, लेकिन यह वही सच है जिसके प्रति मुझे बार-बार और लगातार संकल्पित रहना है ताकि मेरा उद्धार बना रहे।

प्रश्न: क्या आपने कभी किसी से पूरे दिल से प्रेम किया, और फिर उसने आपसे प्रेम करना छोड़ दिया? क्या आपको वो दिल टूटने का दर्द याद है? अब परमेश्वर के दु:ख को महसूस करो।

प्रश्न: क्या कभी किसी ने आपका गलत फायदा उठाया और आपका इस्तेमाल किया? क्या उस बात का दर्द याद है? अब परमेश्वर के दर्द को महसूस करो!

प्रश्न: क्या कभी किसी ने आपकी उपेक्षा की? आपको भूल गए? अस्विकार किया?धोखा दिया? क्या उन बातों का दर्द याद है? अब परमेश्वर का दर्द महसूस करो!

प्रश्न: आपके सपनों के राजकुमार या राजकुमारी के साथ आपका विवाह हुआ और विवाह में उसने अपना जीवन और अपना सबकुछ आपको देने का वादा किया और फिर दूसरे व्यक्ति के सो कर - उसके साथ व्यभिचार करके उन वायदों को झूठा ठहराया; तो आप कैसा महसूस होगा?

जब हम परमेश्वर के साथ सच्चाई से नहीं चलते तो परमेश्वर को भी ऐसा ही लगता है।

आपकी लापरवाही और भरोसे की कमी से परमेश्वर को कैसा लगता है?

आपके व्यभिचार के पाप के बारे में परमेश्वर को कैसा महसूस होता है?

परिवार, काम, व्यापार या स्कूल के लिये परमेश्वर को दूर धकेला जाना; परमेश्वर को कैसा लगता है?

परमेश्वर के प्रती और परमेश्वर के लिये हमारी इच्छा और उत्तेजना की कमी परमेश्वर को कैसा महसूस कराते हैं?

यदि आपके रिश्तों में यह बातें हों तो आपको कैसा लगेगा?

जितना ज्यादा प्रेम करने की क्षमता, उतना ही ज्यादा दर्द महसूस करने की क्षमता। जितना अधिक प्रेम उतना ही अधिक चोट लगने की संभावना।

जब क्रूस की बात आती है, तो जीवनभर हमें - क्रूस के दर्द को महसूस करना है!

पाप परमेश्वर को दु:ख पहुंचाता है। अपने परमेश्वर को अपने पाप से दु:ख न पहुंचाने के आपके इरादे कितने गहरे हैं?

आज अपने पापों और परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते के बारे में एक कभी न टूटने वाला निर्णय बनाओ। कैसे? यह बहुत आसान है - दर्द को महसूस करो!

आगे के अध्ययन के लिये: भ.सं. 36, यशायाह 43:16-24, 53:4-6, होशे 11, लूका 15:21-4,1कुरू. 6:12-20, याकूब 4:7-10.

3 यीशु का लहू-शुद्ध करता रहता है

1यूहन्ना 1:7 "उसके पुत्र यीशु का लोहू हमें सब पापों से शुध्द करता है।"

यीशु ने पहले ही मेरे लिये जो किया उसके बराबर कुछ करने के लिये मैं क्या कर सकता/ती हूँ? क्या मैं पर्याप्त अच्छे काम कर सकता हूँ, पूरी तरह पवित्र रहूँ, दूर तक अपने घुटनों पर रेंगकर चलूँ, पर्याप्त पैसा दूं, पूरे ज़ोर से प्रार्थना करूँ, या फिर अनेक पापियों को बचाऊं? मैं चाहे जो भी करूँ; यीशु के प्रेम भरे त्याग और अनुग्रह के आस-पास भी नहीं पहुंच सकता।

केवल यीशु का बहाया हुआ रक्त ही मेरे लिये क्षमा प्राप्त कर सकता था। **(इफि.**1:7**)**

उनका लहू जीवन में बस एक बार घटने वाली घटना के समान नहीं था। परमेश्वर के बच्चों के नाते यीशु के लहू से होने वाले फायदों का हमें आश्वासन दिया गया है।

बहता हुआ लहू प्रतीक है; एक का जीवन दूसरे के लिये दिये जाने का।

हमारी यह सोच कि, क्षमा के लिये परमेश्वर की योजना बहुत आसान, बहुत कठीन, या सही नहीं।

यीशु के लहू का बदला हम एक बकेट भर कर आंसु, एक वर्ष में 365 भले काम, या फिर हफ्तों तक उपवास और प्रार्थना करके नहीं चुका सकते। हम घमंड से भरकर यह नहीं कह सकते कि हम पूरी तरह से सिद्ध हैं और इसीलिये हम क्षमा के पात्र हैं। **(रोमियों** 3:23**)**

क्या परमेश्वर के सिद्ध योजना से बढ़कर हमें अपने कमज़ोर खुद के निर्माण किये त्याग पर ज्यादा विश्वास है? हमारे पापों के लिये यीशु के बलीदान का पहले हमें स्वीकार करना होगा, तब परमेश्वर के लिये हमारे आनन्दमय त्यागी जीवन का कुछ अर्थ होगा।

क्या आप अपने जीवन का महत्व और मूल्य लहू से खरीदे गए एक पापी के आधार पर करते हैं और ना कि अपनी योग्यताओं के द्वारा एक सिद्ध जीवन पर?

अगली बार आप पाप में गिरोगे तो क्या करोगे?

आगे के अध्ययन के लिये: भ.सं. 130, रोमियों 5:1-11, इब्रानियों 9:15-22, 1पतरस 1:18-20, 1यूहन्ना 1:5-10.

4 क्षमा–क्षमा करने की स्वतंत्रता

इफिसियों 4-32-5:2-"एक दूसरे पर कृपालु, और करूणरमय हो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो। तुम परमेश्वर के प्रिय बच्चे हो, इसलिए तुम्हें उसके सदृश बनना चाहिये। तुम प्रेम में जीवन बिताओ, जैसे मसीह ने हम से प्रेम किया और हमारे लिए अपने आपको सुखदायक सुगन्ध के लिए परमेश्वर के आगे भेंट और बलि के रूप में चढ़ा दिया।"

क्षमा करना मनुष्यों का गुण नहीं है - यह स्पष्ट रूप से एक इश्वरीय गुण है जो परमेश्वर ने संभव किया। यीशु के क्रूस पर जाने के उदाहरण के द्वारा इस बात का प्रोत्साहन मिलता है।

यीशु ने यह कैसे किया? जन्म से लेकर मृत्यु तक यीशु का जीवन संकटों से भरा था।

आपके और मेरी सोच की तरह यीशु ने कभी यह आशा नहीं की कि उनका जीवन बिना संकट के गुज़रे- वो सिर्फ यह जानते थे कि परमेश्वर न्यायी हैं।

यहूदा जिसने उन्हें धोखा दिया, पतरस जिसने उनका इनकार किया, और दूसरे जो उन्हें छोड़कर भाग गए उनको सबको यीशु से केवल दया ही मिली।

उन्होंने न केवल खुद क्षमा किया परन्तु अपने शिष्यों को भी उसकी शिक्षा दी (**मत्ती**18:21-35) निर्दय सेवक के दृष्टान्त के द्वारा।

लूका 17:1-5 में उन्होंने अपने भाई को दिन में सात बार क्षमा करना सीखाया।

गतसमने में उनकी गहरी पीड़ा का प्रदर्शन हुआ जब उनका पसीना खून बनकर बहने लगा और परमेश्वर से अलग होने का भय जो क्रूस पर एक सच बन गया जब उन्होंने ऊंचे स्वर से पुकार कर कहा, "हे परमेश्वर, हे परमेश्वर तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?"

इतने सारे दर्द और पीड़ा सहने के बाद भी, परमेश्वर या किसी मनुष्य के प्रती बिना किसी कडुवाहट के उन्होंने मृत्यु को सहा। और परमेश्वर में उनके इसी विश्वास के कारण उन्हें पुनरूत्थान का प्रतिफल मिला।

क्या हमें अपने चोटों का दु:ख महसूस होता है? यही सच्चाई है।

जैसा यीशु ने परमेश्वर पर विश्वास किया क्या हम भी ऐसा ही विश्वास रखते हैं? यह हमें सारे गुस्से, रोष,क्रोध और कडुवाहट से छुटकारा देगा।

परमेश्वर पर भरोसा रखो और अपने आपको परमेश्वर और उनके क्षमा करने के तरीकों के अधिन करो और न्याय केवल परमेश्वर के हाथ में छोड़ दो।

आगे के अध्ययन के लिये: होशे14:1-2, मत्ती 16:21-35, लूका 17:1-4, इफि.4:31-32, 1पतरस2:18-25.

5 बपतिस्मा-भविष्य में लौटना

रोमियों 6-3-4-"क्या तुम नहीं जानते कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया है तो हमने उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया है? मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया वैसे ही हम भी नए जीवन को जीएं।"

हर एक व्यक्ति को अपने एकलौते पुत्र के क्रूसे के साथ जोड़ने के लिये बपतिस्मा परमेश्वर की एक योजना है।

बपतिस्मा में हम, **"उसी के साथ गाड़े गए, और उसी में परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास करके, जिस ने उसको मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे।"** (कुलुसियों 2:12)

बपतिस्मा हमारी कब्र थी जहां हमें मसीह के साथ गाड़ा गया।

पतरस उस क्रूस को जानता था जिससे डर कर वह भागा था यह एक ऐसा क्षण था जब सारी मनुष्य जाति परमेश्वर से जुड़ी जब उसने यह प्रचार किया, **"अपने पापों से मन फिराओ, और तुम में से हर एक व्यक्ति अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले। तब तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे। यह प्रतिज्ञा तुम्हारे लिए और तुम्हारी संतान और उन सब दूर-दूर के लोगों के लिए भी है जिनको हमारा प्रभु परमेश्वर अपने पास बुलाएगा।"**(प्रेरित 2:38-39)

क्या आप अब भी बहूत दूर हो? या आप जुड़े हुए हो?

क्या आप यीशु की मृत्यु और पुनरूत्थान के आत्मविश्वास में चल रहे हो?

जो व्यक्ति मर गया, वह पाप से छूट गया।(**रोमियों** 6:6-7)

आज क्रूस और यीशु की खाली कब्र की ओर जाओ। अपना बपतिस्मा के कब्र और इतने वर्षों में जितने भी बपतिस्माओं के आप गवाह रह चुके हो उन्हें याद करो। बपतिस्मा के पानी में यीशु के साथ गाड़े जाने से पहले उस पानी में आपने की हुई प्रार्थना को याद करो। जब आप उस पानी के कब्र से बाहर आए उस आनन्द को याद करो।

अब अपनी नज़र अपने परीवार के सदस्य, अपने दोस्तों और अपने आस-पास के सभी लोगों पर घुमाओ जो अब तक बपतिस्मा के मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरूत्थान के द्वारा अब तक मसीह से नहीं जुड़े हैं। आप उनके लिये यह नहीं कर सकते लेकिन आप उन्हें क्रूस के पास बुला सकते हैं।**आगे के आगे के अध्ययन के लिये:** 2राजा5:1-14, गलातियों 3:26-29, कुलुसियों 2:9-15.

6 **प्रभु भोज**-हमेशा याद करना

लूका 22-14-15, 19-20-जब समय आ पहुंचा तब वह प्रेरितों के साथ भोजन करने बैठे। यीशु ने उनसे कहा, "मेरी बड़ी इच्छा थी कि दु:ख भोगने से पहले यह फसह तुम्हारे साथ खाऊं।" यीशु ने रोटी ली और धन्यवाद करके तोड़ी। उन्होंने अपने चेलों को दी और उन से कहा,"यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिये दी गई। मेरे स्मरण के लिए यही किया करो।" इसी रीति से यीशु ने भोजन के बाद कटोरा भी दिया और उन से कहा, "यह कटोरा मेरे उस लोहू में जो तुम्हारे लिये बहाया जा रहा है, नई वाचा है।"

फसह। यहूदियों के लिये इस शब्द का अर्थ था मिस्र की गुलामी से आज़ादी।(निर्गमन 12)

यीशु इस पर्व को मना रहे थे, जब उन्होंने घोषणा की **नई वाचा**-नई योजना की, यहूदी बलीदान की रीति की जगह हमेशा के लिये सर्व-क्षमा की सिद्ध योजना आई।

प्रभु भोज की शुरूआत इसी मकसद से की गई।

यीशु यह जानते थे कि हमें यदि प्रोत्साहित और केन्द्रिभूत रहना है तो यह बलीदान याद रखने के लिये हमें एत्रित आकर क्रूस के कदमों में जाना होगा।

यीशु मृत्यु के बिलकुल करीब थे फिर भी उन्होंने "धन्यवाद दिया"। क्योंकि उनके पिता की इच्छा पूरी होने जा रही थी और मनुष्यों का जीवन बदलने जा रहा था।

इस रविवार जब आप प्रभु भोज में भाग लेंगे तब अपने मन में ज़ोर से चिल्लाकर कहो, "परमेश्वर के प्रेम से हमें कौन अलग कर सकता है?" और धन्यवाद दो।

परन्तु जब आप धन्यवाद दोगे तो अपने आपको परखो (1कुरू.11:28) अपने पर दोष मत लगाओ। अपने आप को दीन बनाओ। क्रूस को आपका वो पाप सामने लाने दो जिसे आपको कबूल करना और क्रूस पर चढ़ाना है।

क्या आप प्रभु को उस तरह से याद कर रहे हो जैसा वो चाहते? क्या आप उस तरह से धन्यवाद दे रहे हो जैसा उन्होंने दिया था? क्या यह खास समय आपके लिये; स्वतंत्रता के लिये धड़कता है? क्या आप उस क्षण के लिये जीते हो जब सभी शिष्य एकत्रित होकर मसीह के लहू से लिखी नई वाचा को याद करते हैं?

आगे के अध्ययन के लिये: निर्गमन 12, यशायाह 53, रोमियों 8:31-39, 12:1-2, 1कुरू.11:17-34.

7 ज्ञान – परमेश्वर का ज्ञान और सामर्थ

1कुरून्थियों 1:18-"क्रूस की कथा नाश होनेवालों के लिये मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पाने वालों के लिये परमेश्वर की सामर्थ है।"

क्रूस में परमेश्वर के अप्रतीम सामर्थ, ज्ञान और उद्धार का प्रदर्शन हमें दिखाई देता है।

परन्तु इस छुटकारे की योजना को लोग सही रीति से समझ नहीं पाए और सदियों से यह कई लोगों के लिये ठोकर का कारण बना।

परमेश्वर ने लोगों द्वारा घृणित क्रूस,मनुष्य की ठट्ठा और दुरूपयोग को लेकर संसार को धार्मिकता, पवित्रता और छुटकारा दिया (1कूरू. 1:26-31)।

आज यहूदियों और युनानियों की आत्मा जीवित है। अपने आप का इनकार कर क्रूस उठाकर चलने को कोई मान्यता नहीं। यीशु के पीछे चलने का हम एक तर्कसंगत, बन्धनमुक्त, कोमल, सरल और आसान तरीका ढूंढते हैं । पढ़ाई या खेल या वैज्ञानिक खोज या कला के प्रति हम यदि लवलीन हैं तो संसार उसकी प्रशंसा करता है और वहीं यदि कोई पूरे जुनून से क्रूस को पढ़कर यीशु के पीछे चलना चाहता है तो उसका मज़ाक उड़ाया जाता और उसे नीचा देखा जाता है।

यीशु इस संसार पर अपनी छाप जमाने नहीं आए। आपका इस संसार में क्या मकसद है?

संसार के ज्ञान और बहस से आप कैसे निपटते हो?

यीशु के क्रूस पर, परमेश्वर के ज्ञान और सामर्थ का जो प्रदर्शन हुआ क्या आप उसका उपयोग करते हो?

आगे के अध्ययन के लिये: 1कुरू.1-3, 4:18-21, यशायाह 55:8-11, 2कुरू.10:1-5, याकूब 3:13-18.

8 घमण्ड-किसे प्रशंसा मिलेगी

गलातियों 6:14-"ऐसा न हो कि मैं और किसी बात का घमण्ड करूं, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का घमण्ड करूं जिसके द्वारा संसार मेरी दृष्टी में और मैं संसार की दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ।"

यह हमारा स्वभाव है कि किसी बात का श्रेय लें और अपनी उपलब्धियों के बारे में घमण्ड करें। हम यह भूल जाते हैं कि वह परमेश्वर हैं जिन्होंने हमें यह सब पाने की योग्यता और अवसर दिया। हम इसलिये घमण्ड करते हैं क्योंकि उससे हमारी कीमत आंकी जाती है।

हम दिनभर बिना प्रार्थना और बिना बायबल अध्ययन के गुजार देते और हमें हमारे हृदय में छुपा घमण्ड दिखाई भी नहीं देता।

...परन्तु अपने पर अपनी निर्बलताओं को छोड़, अपने विषय में घमण्ड न करूंगा। (2कुरू. 12:5)

हमारी निर्बलताओं का घमण्ड? यह तो बिलकुल उलटा है। क्रूस हमारे मूल्य को मान्यता देता है ना कि हमारे कामों, उपलब्धियों और घमण्ड को।

क्रूस हमें अपनी प्रशंसा और बढ़ाई के लिये किये जानेवाले कामों से स्वतंत्र करता है।

हमें अपने निर्बलताओं पर घमण्ड क्यों करना चाहिये?

2कुरून्थियों 12:10-"ऐसा इसलिये मैं बड़े आनन्द से अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करूंगा ताकि मसीह की सामर्थ मुझ पर छाया करती रहे.....क्योंकि जब मैं निर्बल हूँ तभी मैं बलवान हूँ।"

क्या आप नहीं चाहते कि परमेश्वर का वो सामर्थ जिसने इस सृष्टि की रचना की, लाल समुद्र को दुभागा, आपके जीवन में एक मृत मनुष्य को जिलाया; वो सामर्थ आपके पास हो? अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करके आप यह सब पा सकते हैं।

इसका अर्थ यह नहीं है कि हम अपने आप पर तरस खाएं और दु:खी हो जाएं।

इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर और यीशु के प्रति विश्वासी बने रहने के लिये हम किसी और पर नहीं पर उस प्रेम पर निर्भर हैं जो प्रेम परमेश्वर हमसे करते हैं।

वो एक ऐसा व्यक्ति है जो अपनी कमज़ोरियों को मानता है और अपने पापों को कबूल करके परमेश्वर की ओर से प्रमाणित होना चाहता है। अपनी छवी और अपने मूल्य को साबित करने की बात से वह निश्चिन्त रहता है।

क्या आप एक ऐसे व्यक्ति हो? क्या आप ऐसे व्यक्ति बनना चाहते हो? आप घमण्डी हो या नम्र? आप परमेश्वर पर विश्वास करते हो या अपनी योग्यताओं पर? अपनी प्रशंसा कराने के लिये क्या आप दूसरों को दूर धकेलते हैं या फिर अपनी नम्रता के कारण आप लोगों को अपने पास लाते हो?

आगे के अध्ययन के लिये: व्य.वि.8:10-18, दानियेल 4:28-37,रोमियों 4, 1कुरू.2:1-5, 2कुरू.5:11-21.

9 आत्म-समर्पण- मृत्यु द्वारा जीवन

यूहन्ना 12:23-25 इस पर यीशु ने उन से कहा,"वह समय आ गया है कि मनुष्य के पुत्र की महिमा हो। मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि जब तक गेहूं का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है। परन्तु जब मर जाता है तब बहुत फल लाता है। जो अपने प्राण को प्रिय जानता है, वह उसे खो देता है। और जो इस जगत में अपने प्राण को अप्रिय जानता है, वह अनन्त जीवन के लिये उसकी रक्षा करेगा।"

परमेश्वर का ज्ञान हमारी सोच से बिलकुल विपरीत है। **उनमें आत्म-समर्पण से विजय प्राप्त होता है। निर्बलता में बल मिलता है। मृत्यु से जीवन मिलता है।**

प्रतिदिन अपना इनकार कर, क्रूस उठाकर चलना कठीन है। खुद होकर आत्म-समर्पण करना आसान नहीं है। क्रूस न तो आरामदायक है और न ही आनन्ददायक। जब तक हम यीशु के साथ क्रूस पर नहीं चढ़ाए जाएंगे तब तक मसीह हम में जीवित नहीं होगा।(**गलातियों 2:20,4:19**)

नियंत्रण करने की इच्छा हमारे मन में गहराई से समायी हुई है। लोगों और अवसरों को चतुराई से अपने फायदे के लिये उपयोग करवाने में हम निपुण हो जाते हैं और फिर इतने साहसी भी हो जाते हैं कि ऐसा ही कुछ परमेश्वर के साथ भी करने का प्रयत्न करते हैं।

यीशु इससे हमें स्वतंत्र करना चाहते हैं। पाप के दासत्व की जगह सामर्थहीन धर्म के दासत्व में रहने के लिये शैतान हमें फंसाता है।

हम मूर्ख हैं जो शैतान पर विश्वास करते हैं क्योंकि परमेश्वर का मार्ग दु:खदायी है।

हमारे जीवन की अधिकतर समस्याओं को इस तरह से रचा गया है कि उससे हमारा घमण्ड और स्वार्थीपन को क्रूस पर लटकाया जा सके और इसके फलस्वरूप आत्म-समर्पण और साथ ही उन्नति उत्पन्न हो।

यीशु को इससे गुजरना पड़ा। (**इब्रानियों 5:8-9**)

बिना दु:ख सहे हम परिपक्व नहीं हो सकते। (**इब्रानियों 12:5-11, याकूब 1:2-3**)

हमारी प्रार्थनाओं के बारे में विचार करो, क्या वह परमेश्वर से ऐसा अनुरोध है कि वह हमारे स्वार्थी इच्छाओं पर अपनी छाप लगाएं?

क्या हमारे जीवन के प्रभु हम खुद हैं, या परमेश्वर हैं? विशेष रूप से उन सभी बातों के लिए प्रार्थना करो जिनमें आपको आत्म-समर्पण करना है।

विशेष रूप से आत्म-समर्पण के अपने संघर्षों के बारे में एक दूसरे से खुलकर बातें करो। रिश्ते की इस गहराई के प्रति वचनबद्ध रहो। अपने आराम के क्षेत्र से बाहर निकलकर सेवा करने के लिये तैयार रहो। सब बातों से छुटकारा पाओ और परमेश्वर को मौका दो!

आगे के अध्ययन के लिये: यशायाह 42:5-7, मत्ती 26:36-46, कुलु.1:13-14,2:8, 2तिमुथियुस 2:25-26, 2याकूब 4:1-3.

10 आत्म-त्याग - बिना अफसोस के त्याग

1यूहन्ना 3:16 "हम प्रेम को इस प्रकार जानते हैं: प्रभु यीशु मसीह ने हमारे लिए अपने प्राण दे दिए और हमें भी विश्वासी भाईयों के लिए अपने प्राण देने चाहिये।"

यीशु के पास बहुत से अवसर थे यह कहने के लिये कि, "अब बस!... अब यह सब उसे करने दो मुझे नहीं!...यह सब उसकी जिम्मेदारी है मेरी नहीं!...मैं थक चुका हूं; किसी और को यह करने दो...तुम करो मैंने बहुत किया...यह मेरा काम नहीं है...मेरे पीछे मत पड़ो!...जब मेरी मर्ज़ी होगी तब मैं करूंगा।" लेकिन उन्होंने ऐसा कभी नहीं कहा।

उन्होंने अपने आप का इनकार किया और मरते दम तक रोज़ क्रूस उठाकर चला।

इस युद्ध को उन्होंने प्रार्थना के द्वारा जीता।(**मत्ती 26:36-46**)

जहां आत्म-त्याग नहीं वहां क्रूस नहीं। जहां क्रूस नहीं वहां उद्धार नहीं।

अपने दु:ख पर ध्यान देने के बजाए उन्होंने अपने सतानेवालों को क्षमा किया।(**लूका 23:34**), एक गुनाहगार को बचाया (**लूका 23:43**), और अपनी माँ की ज़रूरतों को पूरा किया(**यूहन्ना 19:27**)।

यीशु ने सबसे कहा, " यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे तो वह अपने आप का इनकार करे और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले।"

जिनसे हम प्रेम करते हैं उनके लिये त्याग करना और उनका ध्यान रखना आसान है - हमारी पत्नि, हमारे बच्चे, हमारे माता-पिता।

क्या हमारा आत्म-त्याग हमारे करीबी लोगों तक ही सीमित है?

यीशु ने हमें अनजान लोगों से, और यहां तक कि अपने दुश्मनों से प्रेम करने के लिये भेजा, कि हम उनके लिये अपने आप का त्याग कर दें।

अपनी आंखें खोलो और अपने चारों ओर की ज़रूरतों को देखो, दूसरों का जीवन बदलने के लिये सेवा और मदद करो।

यदि आपका यह प्रश्न होगा कि, " मैं ही क्यों?"

सिर्फ इतना याद रखो - कि आप यीशु के शिष्य हो। परमेश्वर आपके इस काम को आशीष देंगे।

आओ हम क्रूस के पास चलें और बार-बार, बार-बार, बार-बार अपने आपका इनकार करें तब तक कि जब तक हमारे पास देने के लिये कुछ भी न बाकी रहे।

आगे के अध्ययन के लिये: रोमियों 5:1-11, फिलिप्पियों 2:1-11, याकूब 2:14-26, 1यूहन्ना 2:11-20.

11 दीनता - दीनता की चरमसीमा तक

फिलिप्पियों 2:5,7-8 "जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो। वरन् अपने आपको ऐसा शून्य कर दिया कि सेवक का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। उस ने मनुष्य के रूप में प्रकट होकर अपने आपको दीन किया। वह यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।"

यह धारणा बन चुकी है कि दीनता याने चुप रहना, निष्क्रिय, कोमल और कमज़ोर, बिना दृढ़ विश्वास के कोई भी काम करना। क्या यह सब आपको यीशु के गुणों जैसे लग रहे हैं?

यीशु एक जुनूनी व्यक्ति थे जो गहरे दृढ़ विश्वास, साहस और मकसद से भरे थे। उन्होंने अपने विरोधियों का सामना किया और दृढ़ संकल्प के साथ अपने मकसद की ओर बढ़ते रहे। उन्होंने अपने आपको पूरी तरह से खाली कर दिया और अपने पिता तथा अपने लोगों के लिये सेवक का स्वरूप धारण किया। उन्होंने उनके पैर धोए, कोड़ी को चंगा किया और परमेश्वर की हर आज्ञा का यहां तक पालन किया कि मृत्यु भी सह ली।

हालांकि यीशु पापरहित थे इसके बावज़ूद वह अपने पिता के आज्ञाकारी रहे कि श्रापित ठहरे, इनकार कर क्रूस पर लटकाया जाए और निर्दयता से मार डाला जाए।(**व्य.वि.22:23-24**)

आपकी दीनता को परखने के लिये कुछ प्रश्न:

- अपने परमेश्वर, उनकी कलीसिया, आपके पड़ौसी, आपकी पत्नि, आपके पती और आपके दुश्मन की सेवा करना आपको कैसा लगता है?
- क्या किसी बात के लिये आपको 'बहुत ज्यादा अच्छा' महसूस होता है?
- जब आपको कोई छोटा काम करने को कहा जाता है, या दूसरों के लिये आपको सहना पड़ता है तो क्या तब भी आपका भरोसा परमेश्वर में होता है?

बिना विश्वास के सच्ची दीनता नहीं आ सकती। इन वचनों पर ध्यान दो।

- परमेश्वर कहां निवास करते हैं?- उसके संग जो खेदित और नम्र है। (**यशायाह 57:15**)
- परमेश्वर किसका आदर करते हैं?- जो दीन और खेदित मन का हो और परमेश्वर का वचन सुनकर थरथराता हो। (**यशायाह 66:2**)
- क्या परमेश्वर के वचनों से आप थरथराते हैं? क्या शांत समयों के कारण आप बदलते हैं?
- अनुग्रह किसको प्राप्त होता है?- परमेश्वर अभीमानियों से विरोध करता है। पर वह दीनों पर अनुग्रह करता है। (**याकूब 4:6**)

आगे के अध्ययन के लिये: 1पतरस 5:5-6, फिलिप्पियों 2:1-11, नी.व. 22:4, 11:2, 18:12.

12 जीवन शैली-प्रति दिन

लूका 9:23- यीशु ने सब से कहा,"यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे तो वह अपने आप से इनकार करे और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले।"

हर दिन क्रूस, प्रतिदिन क्रूस केवल रविवार को नहीं। क्रूस को अपनी जीवन शैली बनाकर यीशु ने अपना जीवन जीया।

बपतिस्मा के पहले हमारे आत्मिक रूप में मृतक होने के प्रति हम जागरूक हुए। और फिर जब हमने क्रूस को देखा हमारा जीवन बदल गया हमने अपने पाप कबूल किये, मन फिराया और क्रूस पर मृत्यु , बपतिस्मा के पानी में गाड़े जाने के द्वारा जीवित हुए और पुनरूत्थान के द्वारा अनन्त जीवन पाया।

बपतिस्मा के बाद दिन, प्रतिदिन और हर दिन इन्हीं संकल्पों के अनुसार हमारा जीवन होना था।

यदि क्रूस हमारी जीवन शैली नहीं, तो पाप हमारी जीवन शैली है (**रोमियों 6:16**)। यदि प्रतिदिन हम क्रूस उठाकर चलते हैं तो प्रतिदिन हम अपने पापों के लिये मरते और प्रतिदिन हमारा पुनरूत्थान होता है।

प्रतिदिन हम स्वार्थीपन के लिये मरते और सेवा के लिये जी उठते हैं; प्रतिदिन हम लालच के लिये मरते और उदारता के लिये जी उठते हैं; प्रतिदिन हम मूर्खता के लिये मरते और बुद्धिमानी के लिये जी उठते हैं; प्रतिदिन हम असुरक्षितता के लिये मरते और आत्मविश्वास के लिये जी उठते हैं; प्रतिदिन हम अधर्म के लिये मरते और धार्मिकता और पवित्रता के लिये जी उठते हैं...

इसका अर्थ है पाप से तुरन्त निपटना-कबूली करना, स्वीकारना, पश्चाताप करना, क्षमा करना या क्षमा मांगना, और उसे कई दिनों या वर्षों तक अपने साथ लेकर न चलना।

क्या आप ऐसा करते हो या फिर इन सब बातों को निपटाने से दूर भागते हो? क्या आप हार मानकर हर किसी से बात करना, मिलना- जुलना बन्द कर देते हैं? या फिर आप कुछ ज्यादा ही प्रतिक्रिया दिखाते, ज्यादा सोते, विद्रोही बन जाते हैं?

क्या आप प्रार्थना करते हो? आत्मिक सलाह ढूंढते हो?

कौनसी बातें आपके जीवन का वर्णन करते हैं?

यीशु के क्रूस से लटकने के बजाए क्या आपके ऐसे कुछ पाप हैं जिनसे आप लटके हो?

आगे के अध्ययन के लिये: 1कुरू. 15:31, रोमियों 6:15-23; 8:5-17, इब्रानियों 3:12-13, प्रेरित 2:42-47,फिलिप्पियों 1:27,भ.सं.145:2.

13 **बलिदान-** दर्शक या त्यागी

रोमियों 12:1- "हे भाईयों मैं तुमसे परमेश्वर की दया स्मरण कर यह अनुरोध करता हूं, अपने शरीर को जीवित, पवित्र और परमेश्वर को पसंद आनेवाली भेंट जैसे चढ़ाओ। यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।"

बलिदान। यह शब्द सुनते ही दु:ख, क्लेश और हानि के चित्र सामने आते हैं। हमें जो पसन्द है या जिसे पाने की इच्छा हम रखते हैं, उस चीज का त्याग।

स्वार्थीपन ही हमारा स्वभाव है। हमारा झुकाव देने की बजाए लेने की ओर ज्यादा है। हम पाप के गुलाम हैं (**रोमियों 6:16-17**)।

बलिदान या त्याग का अर्थ है स्वेच्छा से अपने आपको परमेश्वर के सामने प्रस्तुत करना ताकि परमेश्वर के मकसद, सेवा और योजनाओं के लिये वे हमारा उपयोग कर सकें।

यीशु को देखो। सेवा, चंगाई, प्रेम, सुसमाचार का प्रचार और क्रूस पर मरने के लिये उन्होंने अपना स्वर्ग का राज्य छोड़ा, ताकि हमें एक मौका मिले उनके साथ रहने का।

यीशु को धोखा दिया गया, शारीरिक रूप से कष्ट सहा, बुरा बर्ताव किया गया, क्रूस पर चढ़ाया गया, निर्दयता से उनकी जान ली गई, अपने पिता से अलग किया गया- यह सब उन्होंने हमारे लिये किया।

ऐसा उन्होंने क्यों किया? हम जिसके योग्य नहीं थे ऐसा निस्वार्थ प्रेम हमसे करने के कारण।

यीशु का बलिदान हमें मजबूर और संकल्पित करता है।(**2कुरू. 5:14-15**)

छुपना बेईमानी होगी; एक दर्शक बने रहना पाखंडीपन होगा; वचनबद्ध होना सामर्थ्यपूर्ण है।

यदि बलिदान करना हमारे लिये कठीन है तो गतसमने के बाग में जाकर प्रार्थना करो, **"हे मेरे पिता यदि हो सके तो दु:ख का यह कटोरा मेरे सामने से हट जाए। तो भी जैसा मैं चाहता हूं वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो।"**(**मत्ती 26:39**)

क्योंकि यीशु ने प्रार्थना की और उस समय तक प्रार्थना करते रहे जब तक आनन्द से त्याग करने के लिये तैयार न हुए।

तो इसके बाद क्या हुआ? शिष्यों ने पश्चाताप किया और अपने आप को जीवित बलिदान के रूप में प्रस्तुत किया। जब हम जीवित बलिदान बनेंगे तो हमारे आस-पास के लोगों के जीवन पर हमारा प्रभाव अनन्तता के लिये पड़ेगा।

यीशु के प्रेम के द्वारा अपने दिलों को झंझोड़ो, प्रेरणा पाओ और अपने आपको जीवित बलिदान के रूप में दे दो।

यह देखो कि लेने से देना अधिक महिमा से भरा है।

आगे के अध्ययन के लिये: उत्पति 22:1-19, मलाकी 1:6-14; मत्ती 20:26-28, मरकुस 10:17-31, प्रेरित 20:24, फिलिप्पियों 3:7-11.

14 दु:ख सहन - समस्या या संभावना

1पतरस 2:23- "वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दुख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था। पर उस ने अपने आपको सच्चे न्यायी के हाथ में सौंप दिया था।"

1पतरस 5:10- "अब परमेश्वर जो सारे अनुग्रह का दाता है,जिस ने तुम्हें मसीह में अपनी अनन्त महिमा के लिये बुलाया है, तुम्हारे थोड़ी देर तक दुख उठाने के बाद स्वयं ही तुम्हे सिद्ध, स्थिर और बलवन्त करेगा।"

दुख सहना एक समस्या है, हम उसे टालना चाहते हैं, हमें वो पसन्द नहीं।

लेकिन यीशु ने - त्याग, अनादर, झूठे आरोप, धोखा, कोड़े, निन्दा, मुंह पर थूंकना, कांटों का मुकुट, अस्विकारा जाना और क्रूस; यह सब सहा।

दुख हमें ललचाता है। हम उसे ठीक से संभाल नहीं पाते। इन सब बातों के बावजूद यीशु ने बिना पाप में गिरे और बिना विश्वास खोए यह सब कैसे सहा?

क्रूस पर भी यह कैसे संभव हो पाया कि अपने सताने वालों और मार डालने वालों के प्रति भी यीशु का हृदय दया और क्षमा से भरा था?

कौनसे प्रश्न हैं जिनसे हम संघर्ष करते हैं? परमेश्वर क्यों? मैं ही क्यों? यह परमेश्वर की ओर से है या शैतान की ओर से? परमेश्वर उत्तर क्यों नहीं देते?

"प्रभु को यही भाया कि उसे कुचले; और पीड़ा सहने दे।" (**यशायाह 53:10**)

यीशु की तरह हमें भी यह जानने में अपना समय और ऊर्जा व्यर्थ नहीं गंवाना है कि क्यों हम परीक्षा से गुजरते हैं; बजाए इसके इस परीक्षा के समय धार्मिकता से प्रतिक्रीया दिखाने और परमेश्वर में अपना विश्वास न खोने में समय बिताना है।

"जब तुम अनेक प्रकार की परिक्षाओं में पड़ो तब इन परिक्षाओं को बड़े आनन्द की बात समझो।" (**याकूब 1:2-3**)

दुख या परिक्षाएं हमें शुद्ध करते, परिपक्व बनाते और हमारे विश्वास को दृढ़ करते हैं।

हर एक परीक्षा के लिये परमेश्वर का धन्यवाद करो और धार्मिकता में बने रहने का प्रयत्न करो।

"यीशु ने अपने सम्मुख रखे हुए आनन्द के लिये क्रूस का दुख सहा।" (**इब्रानियों 12:2**) आप किस बात के लिये दुख सहोगे?

आगे के अध्ययन के लिये: मलाकी 1 और 3; रोमियों 5:1-5; फिलि. 3:17-21; 4:10-20; इब्रनियों 5:7-10; 1पतरस 4:12-19

15 सेवा - यदि राजा एक सेवक हो

मत्ती 20:25-28- यीशु ने उन्हें पास बुलाकर कहा, "तुम जानते हो कि अन्य जातियों के शासक उन पर प्रभुता करते हैं। जो बड़े हैं, वे उन पर अधिकार जताते हैं। परन्तु तुम में ऐसा न होगा। जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने। जो तुम में अगुवा होना चाहे, वह तुम्हारा दास बने। जैसे कि मनुष्य का पुत्र: वह इसलिये नहीं आया कि उसकी सेवाटहल की जाए, परन्तु वह इसलिये आया है कि वह स्वयं दूसरों की सेवाटहल करे; और बहुत लोगों को छुड़ाने के लिये अपने प्राण दे।"

संसार के राजा जिस तरह चाहते हैं कि दूसरे उनकी सेवा करें और उनकी सेवा में लगे रहें, इनके बिलकुल विपरीत यीशु- परमेश्वर के पुत्र, राजाओं के राजा, सेवा लेने के लिये नहीं परन्तु सेवा करने के लिये और बहुत लोगों को बचाने के लिये अपना प्राण देने के लिये आए।

उन्होंने मनुष्यों के लिये अपने आपको परमेश्वर का दास बनाया। अपने इस पात्र को निभाने में यीशु ने कभी अपने आपको नहीं रोका। यीशु ने जब लोगों को देखा तो उनकी ज़रूरतों या उनकी इच्छाओं के कारण व्याकुल नहीं हुए परन्तु उनकी मदद करने की इच्छा से दया और करूणा से भर गए। इस काम को उन्होंने बोझ नहीं समझा। हमारे क्षमा और प्रायश्चित को उन्होंने अपने जीवन से भी बढ़कर समझा और इसके लिये एक बड़ी कीमत भी चुकाया।

जिन्होंने हमारी सेवा की उन्हीं लोगों का सबसे ज्यादा प्रभाव हमारे जीवन पर पड़ा - हमारे माता-पिता और वो जिन्होंने हमको वचनों का प्रचार किया।

कोई जब अपनी ज़रूरत से ज्यादा दूसरों की ज़रूरतों को पूरा करता है (कुड़कुड़ाकर नहीं) पर स्वेछा से, तो इससे बढ़कर और कोई बात हमारे मन को नहीं छूती।

जब यीशु ने अपने चेलों के पैर धोकर अपना असीम प्रेम दिखाया, तो चेले चकित और नम्र हुए और इस बात ने गहराई से उनके मन को छू लिया।

इस बात पर ध्यान दो-अपने चेलों के पैर धोते समय जैसे यीशु का मन पतरस और यूहन्ना के लिये था वैसा ही यहूदा के लिये भी था। सेवा करना उनका स्वभाव था। हमारा स्वभाव क्या है - क्या हम भेद-भाव करते हैं कि किसकी सेवा करनी है और किसकी नहीं? क्या हम उनकी सेवा करते हैं जो महत्वपूर्ण हैं या फिर अगुवे के स्थान पर हैं; और दूसरों को अनदेखा करते हैं?

हमें सभी की सेवा के लिये बुलाया गया है - हमारा परिवार, भाई, बहन, खोए हुए, हमारे दुश्मन।

जब सेवा की गुहार हमारे काम के आड़े आती है तो हमारी प्रतिक्रीया कैसी होती है?

यदि राजा सेवक है तो हमें क्या करना चाहिये?

आगे के अध्ययन के लिये: मत्ती 20:20-28, 25:31-46; यूहन्ना 21:1-14; रोमियों 15:1-4.

16 सेवा - आश्चर्यजनक सेवा

मरकुस 10:42-44- यीशु ने उनको अपने पास बुलाकर उनसे कहा, "तुम जानते हो कि जो व्यक्ति अन्य जातियों के शासक समझे जाते हैं, वे उन पर प्रभुता करते हैं; और उन में जो बड़े हैं, वे उन पर अधिकार जताते हैं। पर तुम में ऐसा नहीं है। चो कोई तुम में बड़ा होना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने। जो कोई तुम में प्रधान होना चाहे, वह सब का दास बने।"

मरकुस 10 का यह सेवक एक बन्धुआ सेवक था, जिसके पास ना कोई अधिकार, ना पगार और ना ही कुछ बोलने की अनुमती थी वह अपने मालिक का खरीदा हुआ गुलाम था। यहूदी समाज में इनका कोई वजूद नहीं था। यीशु स्वेछा से ऐसे सेवक बने और क्रूस के द्वारा हमारे लिये मार्ग खोला।

क्षमा की हमारी सबसे बड़ी आवश्यक्ता को पूरा करने की इच्छा ने उन्हें क्रूस तक पहूंचाया।

परमेश्वर के राज्य में सची महानता को पाना निर्भर करता है कि हम किस स्तर तक बन्धुआ सेवक हैं। यह आता है स्वयं का इनकार करके ना कि स्वयं की महिमा करके।

अपने घर, ऑफिस और कलीसिया में क्या आप एक सेवक के रूप में जाने जाते हैं? क्या लोग आपके पास इसलिये आते हैं क्योंकि वो जानते हैं कि आपका एक सेवा करने का मन है?

मरकुस 10 में जब्दी के पुत्र जो महान ओहदा पाना चाहते थे वह हम पा सकते हैं; लेकिन उसका रास्ता सेवकाई की तराई, दुखों का कटोरा और क्रूस से होकर गुजरता है।

आओ हम सफलता की सीढ़ी पर चढ़ने को भूलकर सीढ़ी से नीचे उतरकर सेवकाई के उस स्तर तक जाएं जहां हमें एक बन्धुआ सेवक का ओहदा मिल सके।

आगे के अध्ययन के लिये: यशायाह 52:13-53; मत्ती 10:24-25; गलातियों 5:13-15; याकूब 1:9-11; 1पतरस 4:7-11, 5:2-4.

17 दृढ़ निश्चय - आर-पार देखना

लूका 9:51- "जब यीशु के ऊपर उठाए जाने के दिन पूरे होने वाले थे तब यीशु ने यरूशलेम को जाने का दृढ़ निश्चय किया।"

कुछ काम शुरू करना आसान है लेकिन उसे पूरा करने के लिये वैसा चरित्र होना ज़रूरी है। यीशु के पास ऐसा गहरा चरित्र था। दुख, पीड़ा और विरोध के चलते उन्होंने अपना मकसद पूरा किया - यरूशलेम के बाहर कूड़ा इकठ्ठा करने की जगह पर मृत्यु।

हमारे अन्दर पहला विचार यह आता है कि यीशु के लिये यह सब करना आसान रहा होगा क्योंकि यीशु परमेश्वर के पुत्र हैं।

लेकिन थोड़ा करीब से जब हम इसे देखते हैं तो हमें पता चलता है कि आपकी और मेरी तरह यीशु ने भी परीक्षाओं और दबाव का सामना किया।

इब्रानियों 4:15- "हमारा ऐसा महायाजक नहीं जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी न हो सके। वह सब बातों में हमारे समान परखा तो गया तो भी निष्पाप निकला।"

उन्होंने इन सभी बातों का सामना किया। दृढ़ निश्चय न रखने वाले अपने शिष्यों के बीच रहकर बड़ी आसानी से वे कभी भी इन बातों से हार मान सकते थे।

वो इसे कैसे कर पाए?

इब्रानियों 5:7- "उस ने अपने देह में रहने के दिनों में ऊंचे शब्द से पुकार-पुकारकर, औ आंसू बहा-बहाकर उस से जो उसको मृत्यु से बचा सकता था, प्रार्थनाएं और बिनती की....।"

परमेश्वर के साथ मिलकर उन्होंने यह किया।

परमेश्वर उनके लिये सबकुछ थे।

शिष्य बनने से पहले हमने लूका १४:२८-३० पढ़ा। हमने मसीही जीवन बिताने की कीमत को जाना और फिर यीशु को अपने जीवन का प्रभु मानने का निर्णय लिया। इस दौड़ को समाप्त करने के लिये क्या आज हमारे अन्दर वही निर्णय, वही वचनबद्धता और वही दृढ़ संकल्प है?

क्या आज कोई और बात हमारा ध्यान बंटा रहा है (भ्रष्ट सांसारिक इच्छाएं, धन-दौलत की चिन्ता और धोखा) और यीशु के प्रति हमारे दृढ़ संकल्प को खोने का कारण बन रहे हैं?

जिनका ध्यान बंटा होता है वो लोग जीवन में कुछ भी हासिल नहीं करते।

यीशु के साथ का जीवन एक विवाह के समान है, जिसकी शुरूआत एक अपरिवर्तनीय निर्णय और जीवन भर की वचनबद्धता के साथ होती है। हर दिन पहली वाचा को नया और तर-ओ-ताज़ा करना होता है।

शिष्यता के इस मार्ग में भीतर और बाहर दुश्मन होंगे, लेकिन यीशु की तरह अपने मकसद को पाने के लिये आप भी अपना मन पक्का करो।

आगे के अध्ययन के लिये: लूका 13:32; 1कुरू.15:58; 2कुरू.4:7-12; 16-18; फिली.3:12-14; 2तिमु. 4:7-8.

18 सताव - दुराचार लेकिन दुख नहीं

इब्रानियों 12:2-3- "आओ हम विश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु की ओर ताकते रहें, जिस ने अपने सम्मुख रखे हुए आनन्द के लिये क्रूस का दुख सहा। यीशु ने उसकी लज्जा की कुछ चिन्ता न की, और सिंहासन पर परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठ गए। इसलिए यीशु पर ध्यान करो, जिन्होंने पापियों का इतना विरोध सहा ताकि तुम निराश होकर साहस न छोड़ दो।"

मार खाया, कोड़े खाए, थूंका गया, थप्पड़ खाए, ठट्ठा उड़ाया गया, अनादर किया गया, हंसी उड़ाई गई, अस्विकार किया गया, झूठ बोला गया, घूंसे मारे गए, मज़ाक उड़ाया गया,क्रूस पर सताया गया यीशु ने यह सब झेला। शारीरिक और भावुक पीड़ा- उन्होंने यह सब सहा, तिरस्कार और लज्जा। सबसे आश्चर्य की बात यह है कि यह सभी उन्होंने अपने सम्मुख रखे आनन्द के लिये सहा और उस आनन्द की ओर अपना ध्यान केंन्द्रित रखा।

अपने पूरे जीवन भर उन्हें अपने परिवार, गांव और अधिकारियों से सताव सहना पड़ा।

क्रूस हमें सच्चाई के प्रति संसार की प्रतिक्रीया याद दिलाता है। हम जो उनके क्रूस के पीछे चलते हैं हमारे प्रति भी संसार की यही प्रतिक्रीया होगी।

2तिमु. 3:12 "सच तो यह है कि जो विश्वासी मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं, वे सब सताए जाएंगे।"

इन सतावों में भी यीशु अनुग्रह के साथ कैसे जीये? यहां तक कि क्रस पर भी जब वे गहरी पीड़ा सह रहे थे तब भी उन्होंने अपने सताने वालों को क्षमा किया, एक कुकर्मी जिसने विश्वास किया उसे बचाया, अपने माता की ज़रूरतों का ध्यान रखा। वे ये कैसे कर पाए?

उस ने अपने आप को सच्चे न्यायी के हाथ में सौंप दिया था।(**1पतरस 2:23**) उन्हें तब भी यह विश्वास था कि सब परमेश्वर के नियंत्रण में है।

जब कोई आपका अस्विकार करता है तो आपको कैसा महसूस होता है? यदि आपके विरूध कोई गलत रीपोर्ट मिलती है? जब आपको निशाना बनाया और सताया जाता है? क्या आप प्रचार करना कम कर देते हैं? क्या आपको अपने आप के ऊपर दया आती है?

इन बातों से गुजरने का सिर्फ एक ही रास्ता है और वो है परमेश्वर पर विश्वास बनाए रखना और खोए हुओं से प्रेम और उनकी चिन्ता में लगातार लगे रहना।

यदि हमारे हृदय की जड़ें परमेश्वर के वचनों में गहराई तक जमीं रहें तो जब सताव आएगा तब हम विचलित नहीं होंगे परन्तु इसके द्वारा हमारी उत्तमता सामने आएगी।

आगे के अध्ययन के लिये: मत्ती 5:1-12; 13:1-23; रोमियों 8:28-39.

19 काम-काजी दुनिया में - स्थायी प्रभाव

कुलुसियों 3:1-3- "तुम मसीह के साथ जिलाए गए हो। अत: स्वर्गिक वस्तुओं की खोज में रहो, जहां मसीह वर्तमान है और परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठा है। पृथ्वी पर की नहीं, परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ। क्योंकि तुम तो मर गए हो, और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है।"

एक शिष्य के लिये सबसे बड़ी चुनौती है अपने काम की जगह पर यीशु मसीह के उग्र संदेश के अनुसार जीना।

आपके मन में यह प्रश्न उठ सकता है कि आज के हमारे कॉरपोरेट कार्यालय को यीशु कैसे समझ पाएंगे। देखो कि यीशु को किस-किस तरह के लोगों से निपटना पड़ा- हमेशा एक बड़ी भीड़ यीशु के पीछे होती थी, धार्मिक और सरकारी अधिकारी हमेशा उनके पीछे पड़े रहते, उनका अपना परिवार उनके प्रति बहुत आक्रमक था। उनके आस-पास हमेशा सभी प्रकार के डराने वाली ताकतें होती थीं। और फिर भी वो अपने काम से कभी भटके नहीं।

आप तौर पर काम की जगह का वातावरण सांसारिक बातों को प्रोत्साहन देता है - जैसे महत्वाकांक्षा, लोभ, दुष्टता, झूठ, वासना, व्यभिचार, ईर्ष्या, जलन आदि। इन पापों में न पड़ना एक अलग बात है, और इन बातों की ओर अपना मन ना लगाना दूसरी बात है।

किसी बात पर मन लगाना ऐसा है जैसे किसी इमारत की नींव में सीमेंट भरना। जो एक बार जम जाए तो फिर उसे हिलाना मुश्किल हो जाता है।

आप में से बहुत सारे लोग अपना अधिकतम समय काम की जगह पर बिताते हैं और यदि वहां पर आप अपना क्रूस उठाकर नहीं जा रहे हैं तो फिर आप क्रूस के अनुसार कैसे जीयेंगे?

अपना मन स्वर्गिक बातों पर लगाने का अर्थ है, हमारी ज़रूरतों को पूरा करने के लिये हमारी अपनी योग्यताओं, साधनों और सामर्थ पर निर्भर ना होकर परमेश्वर को मौका देना हमारी ज़रूरतें पूरी करने का।

अपने आप से अपने काम करने के समय के बारे में प्रश्न करो। क्या आप परमेश्वर की महिमा करने के लिये काम कर रहे हो या अपने आपको ऊंचा उठाने के लिये?

कुलुसियों 3:23- "जो कुछ तुम करते हो, तन-मन से करो। तुम यह समझकर करो कि मनुष्यों के लिये नहीं, परन्तु प्रभु के लिये तुम करते हो।"

ऊंचा ओहदा पाने के लिये, पगार में बढ़ौतरी पाने और अधिक से अधिक ऐश-ओ-आराम का सामान इकट्ठा करने के लिये काम करने का मकसद सांसारिक है। यदि आपका मन परमेश्वर को प्रसन्न करने में केंन्द्रित है और फिर आप यह सब पा रहे हैं तो बेहतर है।

अपने हृदय के मकसद को पहचानो। यदि यह सब यीशु के लिये आपको छोड़ना पड़े तो, इन सारी बातों की परीक्षा होगी। क्या आपको वह धनवान युवक याद है? (**मत्ती 19;16-30**)

आगे के अध्ययन के लिये: दानिय्येल1; 4:19-37; मत्ती 23:1-12; फिलि.1:27; याकूब 2:1-13.

20 परिवार में-सिर्फ वयस्कों के लिये ही नहीं

यूहन्ना 19:25-27- "यीशु के क्रूस के पास उसकी माता और माता की बहिन मरियम, क्लोपास की पत्नी और मरियम मगदलीनी खड़ी थीं। यीशु ने अपनी माता और उस चेले को जिस से वह प्रेम करते थे, पास खड़े देखकर अपनी माता से कहा, "हे नारी, यह तेरा पुत्र है"। तब यीशु ने चेले से कहा, "यह तेरी माता है"। उसी समय से वह चेला यीशु की मां को अपने घर ले गया।"

इस दृष्य पर ध्यान दो मरियम अपने पहिलौठे का निर्दयता से हत्या होते देख रही है। कैसे उसका सीना छलनी हो गया होगा।

यीशु ने क्रूस पर अपनी मां की चिन्ता जताई लेकिन इस सारे नाशवान पीड़ा के अनुभव से उन्हें सुरक्षित नहीं रखा। अपनी माता को यह सारी पीड़ा झेलने से दूर रखने के लिये यीशु ने अपने सामर्थ का उपयोग क्यों नहीं किया?

सिर्फ यीशु अकेले ही क्रूस की इस पीड़ा से नहीं गुज़रे परन्तु अपनी माता को भी यह सब झेलने दिया। सोचो क्यों?

शिष्यता की कीमत चुकाने में किसी भी रिश्ते को छूट नहीं है।

क्रूस के कदमों में हम सीखते हैं: परिवार परमेश्वर के लिये है। वे उनकी योजना और मकसद के लिये जीते हैं।

क्रूस हमारे पूरे परिवार के सम्मुख हमें यीशु के लिये अपना जीवन देने के लिये बुलाता है, ताकि उनका जीवन बचाया जा सके।

क्या आपके बच्चे परमेश्वर के प्रति आपके प्रेम को देख पा रहे हैं? क्या वो देख पा रहे हैं कि कैसे आप खोए हुओं और कमज़ोरों को बचाने के लिये अपना समय,पैसे और नीन्द का त्याग कर रहे हैं?

क्या आप अपने बच्चों को त्याग करना सिखाते हैं?

अपने बच्चों के आत्माओं को बचाने की जिम्मेदारी हमें दी गई है। मेरी प्रार्थना है कि यीशु की तरह हम आने वाली पीड़ी के हमारे बच्चों को क्रूस और विजय की ओर ले जाएं।

आगे के अध्ययन के लिये: उत्पति22:1-19; व्य.वि. 6:1-9;1शमुएल2:12-36; मत्ती19:13-15; लूका 2:41-52.

21 परमेश्वर का स्वभाव - उत्तम; बस और कुछ नहीं

1पतरस 1:17-19- "जबकि तुम 'हे पिता,' कहकर उस से प्रार्थना करते हो जो बिना पक्षपात हर एक के काम के अनुसार न्याय करत है तो अपने परदेशी होने का समय भय से बिताओ। तुम जानते हो कि तुम्हारा निकम्मा चाल-चलन जो पूर्वजों से चला आता है, उस से तुम्हारा उद्धार चांदी-सोने अर्थात् नाशमान वस्तुओं द्वारा नहीं हुआ। पर निर्दोष और निष्कलंक मेमने अर्थात् मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा हुआ।"

जब यीशु का लहू क्रूस पर बह रहा था, तब परमेश्वर हमें हमारे जीवन जीने के खोखले तरीकों और हमारे खोखले तत्त्वज्ञान के बारे में फिर एक बार सोचने की चुनौती देते हैं। उन्होंने अपने हृदय को खोलकर अपना स्वभाव हम पर प्रकट किया। क्रूस पर से वो हमें बिनती कर रहे थे कि हम उनका अनुकरण करें।

एक व्यक्ति का देना उस व्यक्ति के स्वभाव को उजागर करता है। क्रूस पर परमेश्वर ने अपना सबसे उत्तम दिया...उनका एकलौता पुत्र।

हमारा पाप इस प्रकार के अनमोल और कीमती उपहार की मांग करता है। परमेश्वर का कीमती उपहार एक प्रतिक्रीया की मांग करता है। आपकी प्रतिक्रीया क्या है?

क्या परमेश्वर की दया आपको धार्मिकता, संयम, अच्छाई, भाईचारे का प्रेम, और पवित्रता में परिश्रम से लगातार बढ़ते रहने का प्रोत्साहन देता है?

पाप के प्रति परमेश्वर के स्वभाव का अनुकरण क्या आप कर रहे हो?

इब्रानियों 10:19-27- "हे भाईयों, जबकि हमें यीशु के लोहू के द्वारा उस नए और जीवित मार्ग से पवित्र स्थान में प्रवेश करने का साहस हो गया है। जो उस ने परदे अर्थात् अपने शरीर में से होकर हमारे लियेअभिषेक किया है, और वह हमारा ऐसा महान याजक है, जो परमेश्वर के घर अधिकारी है, जो आओ, हम सच्चे मन, और पूरे विश्वास के साथ, तथा विवेक का दोष दूर करने के लिये हृदय पर छिड़काव लेकर, देह को शुद्ध जल से धुलवाकर परमेश्वर के समीप जाएं। हम अपनी आशा के अंगीकार को दृढ़ता सेथामें रहें; क्योंकि जिस ने प्रतिज्ञा की है, वह सच्चा है। हम प्रेम,और भले कामों में उकसाने के लिये एक दूसरे की चिन्ता किया करें। हम एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें, जैसे कि कुछ की रीति है। हम एक दूसरे को समझाते रहें। भाईयों ज्यों-ज्यों उस दिन को निकट आते देखो त्यों-त्यों और भी अधिक वह किया करो। सच्चाई की पहचान प्राप्त करने के बाद यदि हम जान बूझकर पाप करते हैं तो पापों के लिये फिर कोई बलि चढ़ाना बाकी नहीं रहा। हां, दण्ड की एक भयानक प्रतिज्ञा और आग की जलन बाकी है जो विरोधियों को भस्म कर देगी।"

आगे के अध्ययन के लिये: मरकुस 14:1-9; रोमियों 12:12-21, 6:23, 14:19; इफि. 4:1-6; फिलि. 4:8-9.

22 विश्वास - परीक्षा के समय विश्वास

1पतरस 2:22-23- "न तो उसने पाप किया, और न उसके बुंह से कोई छल की बात निकली। वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दुख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था। पर उस ने अपने आपको सच्चे न्यायी के हाथ में सौंप दिया था।"

विश्वास में रहकर जीवन बिताना आसान नहीं है। हम बड़े ध्यान से अपने जीवन की योजना बनाते हैं और सबकुछ नियंत्रण में रखना चाहते हैं। हमें अपने खोज और ज्ञान में सुरक्षितता मिलती है।

यीशु के पीछे चलने के लिये हमें विश्वास की आवश्यक्ता है। यह जोखिम भरा है और हम जोखिम उठाना नहीं चाहते।

जो चीज हमें दिखाई नहीं देती उस बात का आश्वासन और निश्चितता है, विश्वास; लेकिन जो हम नहीं देख पाते उसके अनुसार जीना हमें पसन्द है।

क्रूस यीशु के विश्वास की परीक्षा था। यीशु ने प्रार्थना किया और हालांकि उन्होंने पुनरूत्थान नहीं देखा था, फिर भी पुनरूत्थान के लिये परमेश्वर पर भरोसा किया। हम एक ऐसे विश्वास को देखते हैं जो परखा और सहा गया, फिर भी मजबूती से टिका रहा और कभी निराश न हुआ।

क्रूस और पुनरूत्थान कारण हैं परमेश्वर के प्रत्येक प्रतिज्ञाओं पर विश्वास रखने का।

विश्वास परिस्थितियों को अपनाता और परमेश्वर से मदद मांगता और यह विश्वास रखता है कि परमेश्वर का सामर्थ उन परिस्थितियों से हमें बाहर निकालने के लिये काफी होगा।

जब दूसरे हमारे विश्वास को देखते हैं तो अपने विश्वास को बढ़ाने की वो भी प्रेरणा पाते हैं।

आज आप ऐसी कौनसी परिस्थितियों से गुजर रहे हैं जिसके लिये न डगमगाने वाले विश्वास की ज़रूरत है?

क्या उन परिस्थितियों को आप एक व्याकुल करने वाले बोझ के समान देखते हैं जिसे परमेश्वर ने आपके जीवन में नहीं लाना चाहिये था; या फिर आप इन्हें एक अवसर के रूप में देखते हैं?

आगे के अध्ययन के लिये: 2तिमु.1:8-12, 4:6-8; इब्रानियों 4:14-16,11-12; 1पतरस 1:3-9.

23 खोए हुओं से प्रेम - नीचे मत उतरो!

मत्ती 27:39-42- "आने-जानेवाले सिर हिला-हिलाकर यीशु की निन्दा कर रहे थे। वे यह कहते थे, "हे मन्दिर के ढानेवाले और तीन दिन में उसको बनानेवाले, अपने आपको बचा। यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो क्रूस पर से उतर आ।" इसी तरह महायाजक शास्त्री और धर्मवृद्ध यीशु का मजाक उड़ाते हुए कह रहे थे, "इस ने दूसरों को बचाया, लेकिन अपने को नहीं बचा सकता। यह तो इस्त्राएल का राजा है। अब क्रूस पर से उतर आए, तो हम इस पर विश्वास करें।"

एक पापरहित जीवन जीने के लिये यीशु ने अपने पूरे ३३ वर्ष बिता दिये थे। सिर्फ एक मनुष्य जिसने कोई पाप नहीं किया था वह हर एक मनुष्य जिसने पाप किया था; उनके लिये मर रहा था। कुछ ही घंटों में यह समाप्त हो जाएगा। छुटकारा पूरा हो जाता था।

परन्तु वहां क्रूस पर लटके अपनी अन्तिम सांसें लेते हुए उन्हें यह अपमान भरे शब्द सुनने पड़ रहे थे।

क्या होता यदि यीशु क्रूस से नीचे उतर आते? यीशु अपने आप को बचा सकते थे। अपनी एक आज्ञा से वह स्वर्गदूतों की सेना को बुला सकते थे।

क्या वो अपने आपको बचाने और दूसरों को अपनी रक्षा खुद करने देने की लालसा में पड़े? वहां कोई भी नहीं था जो प्रतिक्रीया दिखा रहा हो।

क्या होता यदि यीशु यह सोचते कि, क्रूस पर से नीचे उतर आए तो यह बात लोगों को उनपर विश्वास करने में मदद करेगा।

उन्होंने यह निर्णय किया था कि जब तक सबकुछ पूरा नहीं हो जाता वो क्रूस से नहीं उतरेंगे।

किस बात के कारण वो क्रूस पर लटके रहे? यदि यह सच है कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि अपना एकलौता पुत्र दे दिया तो यह भी सच है कि यीशु हमसे इतना प्रेम करते हैं कि हमारे लिये मरे।

उन्होंने हमारे खोए हुए हालत को देखा और सिर्फ उसी बात से प्रतिक्रीया दिखाया जिससे हम बचाए जा सकते थे।

जिन खोए हुओं को बचाने के लिये उन्होंने अपना प्राण दिया उनको लगातार ढूंढते रहने के लिये वो हमें बुलाते हैं। काम वही है। क्रूस हमें उठाना है। प्रेम करने का और कोई आसान रास्ता नहीं है। खोए हुओं से प्रेम करना हमेशा से ही एक महंगा सौदा है।

आपके पड़ोस का व्यक्ति जो यीशु को नहीं जानता क्या आप इस लालसा में पड़ रहे हो कि उससे प्रेम न करो?

क्या आप लोगों को मिलना बन्द करने की लालसा में गिर रहे हो; क्योंकि वो खुले नहीं हैं?

क्या आप इस लालसा में पड़ रहे हो कि उन लोगों का मार्गदर्शन करना और सलाह देना बन्द कर दें क्योंकि वो पश्चाताप नहीं कर रहे या फिर आपके प्रति आभार प्रकट नहीं कर रहे हैं?

क्या जो व्यक्ति पवित्र शास्त्र का अध्ययन कर रहा है उसको बपतिस्मा देने का जोखिम आप नहीं उठाना चाहते और इंतजार करते रहते हैं कि जब वो पूरी तरह से वचनबद्ध हो जाएगा तब उसको बपतिस्मा देंगे(चिन्ता लगी रहती है कि बपतिस्मा के बाद यदि वह पूरी तरह से वचनबद्ध नहीं रहा तो)?

संसार चीख रहा है, अपने क्रूस से उतर आओ। यीशु का लहू बिनती कर रहा है, कुछ और समय के

लिये डंटे रहो। बस यह अब पूरा होने को है। आपका जीवन किसी को बचा सकता है। आप क्या करना चाहते हो?

आगे के अध्ययन के लिये: लूका 19:1-10; रोमियों 9:1-4,10:1-3; 1कुरू. 9:12-22.

24 काबू पाना - पासा पलटना

इब्रानियों 2:14 - "जबकि संतान मांस और लोहू के भागी हैं तो वह आप भी उनके समान उनका सहभागी हो गया ताकि मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात् शैतान को, निकम्मा कर दे।"

शैतान का हम पर काबू है। हमारी इच्छाओं के कारण वह हममें प्रलोभन पैदा करता है।

हम दूर की सोच नहीं रखते; हमने पाप किया और करते गए। हम पूरे मन से पाप करते हैं और कभी-कभी पाप करने की हमारी इच्छा नहीं होती है फिर भी हम पाप कर डालते हैं।

इस संसार में यीशु की उपस्थिती और मृत्यु; शैतान की योजनाओं पर एक करारा प्रहार था।

उन्होंने मृत्यु के बारे में बात किया (**यूहन्ना 5:21-30**)। मृत्यु का केवल वो ही एक उपाय है यह दावा यीशु ने किया (**यूहन्ना 6:53-57**)। उन्होंने मरे हुओं को जिलाया (**यूहन्ना 11**)। यीशु ने विश्वास किया कि उनकी मृत्यु दूसरों को जीवन प्रदान करेगी (**यूहन्ना 12:23-25**)।

यीशु के पैदा होने से लेकर उनकी क्रूस पर मृत्यु तक शैतान ने हर कोशिश किया यीशु को गिराने का। लेकिन यीशु कभी पाप में नहीं गिरे।

वह सब बातों में हमारे समान प्रलोभन में डाला और परखा गया (**इब्रानियों 4:15**)।

आज शैतान का आप पर एक मजबूत पकड़ है। आप पर उसके अधिकार से क्या आप छुटकारा नहीं पाना चाहेंगे?

वही आत्मा जो यीशु को मरे हुओं में से जिलाया और उनमें बसा था, हम में भी बसा है।(**रोमियों 8:11**)

शैतान का पासा पलटने के लिये ये कुछ बातें हैं जो आप कर सकते हैं:

प्रार्थना करो- परमेश्वर सुन रहे हैं (**इब्रानियों 5:7**)।

पढ़ो - परमेश्वर बात कर रहे हैं (**लूका 4:1-13**)।

विश्वास करो - परमेश्वर सामर्थ हैं (**इब्रानियों 2:18**)।

भरोसा करो - परमेश्वर हमारी सहायता करना चाहते हैं (**इब्रानियों 4:15-16**)।

लड़ो - परमेश्वर जानते हैं कि आप सह सकते हो (**1कुरू. 10:13**)।

ढूंढो - परमेश्वर ने बाहर निकलने का रास्ता दिया है (**1कुरू. 10:13**)।

पाओ - ज़रूरत के समयों में परमेश्वर अनुग्रह करते हैं (**इब्रानियों 4:16**)।

आगे के अध्ययन के लिये: उत्पत्ति 50:15-21; दानिय्येल 3; 1कुरू.15:50-58; 2कुरू.2:10-11; इफि. 6:10-18.

25 प्रार्थना - प्रार्थना और उद्देश्य

लूका 22:39-42 "तब यीशु घर से बाहर निकले और अपनी रीति के अनुसार जैतून के पहाड़ पर गए। चेले उनके पीछे हो लिये। उस जगह पहुंचकर यीशु ने उन से कहा, "प्रार्थना करो, कि तुम परीक्षा में न पड़ो।" वह स्वयं उन से अलग कुछ कदम दूर गए और घुटने टेककर प्रार्थना करने लगे: "हे पिता यदि तू चाहे तो इस कटोरे को मेरे पास से हटा ले। तो भी मेरी नहीं वरन् तेरी ही इच्छा पूरी हो।"

क्रूस के कदमों में हम इस बात को समझ पाते हैं कि प्रार्थना एक विशेषाधिकार है जो यीशु की मृत्यु के बदले हमें मिला है।

क्रूस के कारण हम परमेश्वर के सम्मुख पूरे आत्मविश्वास के साथ जा सकते हैं।

क्या होता यदि यीशु इस कटोरे से न पीते?

क्या होता यदि परमेश्वर यह कटोरा यीशु के पास से हटा लेते?

क्या प्रार्थना आपके लिये नापसन्द काम बन गया है?

क्या प्रार्थना आपके लिये बोरियत बन गया है?

क्या आप विचारपूर्वक और ध्यान से प्रार्थना कर रहे हैं?

याद रहे कि हम प्रार्थना में लगे रहें इस कारण से यीशु को किन बातों से गुजरना पड़ा।

यीशु के अपने प्रार्थना जीवन का एक उद्देश्य था। संसार में खोए हुओं को बचाने के परमेश्वर के काम को पूरा करने के लिये जो ताकत चाहिये था वो पाने के लिये उन्हें परमेश्वर की आवश्वक्ता थी।

आपकी प्रार्थना का उद्देश्य क्या है? क्या वो यह है कि परमेश्वर आपके और आपके परिवार की ज़रूरतों को पूरा करे? या फिर आपकी प्रार्थना केंन्द्रित है दूसरों को यीशु को पाने में मदद करने पर?

यीशु के क्रूस के बिना प्रार्थना असंभव है। आओ, प्रार्थना करने के हमारे विशेषाधिकार और जब हम प्रार्थना करें तो प्रार्थना करने के उद्देश्य के लिये हम आभारी रहें।

आगे के अध्ययन के लिये: मरकुस 1:32-35; लूका 22:39-45; यूहन्ना 17; इब्रानियों 4:14-16, 5:7-8, 13:15-16; प्र.वा. 5:8,8:4.

26 तनाव से निपटना - मैं अकेला नहीं हूँ

यूहन्ना 16:31-32 "यह सुनकर यीशु ने उनसे कहा, "क्या तुम अब विश्वास करते हो? देखो, वह घड़ी आ रही है, वरन् आ पहुंची कि तुम सब तितर-बितर होकर अपना-अपना मार्ग लोगे, और मुझे अकेला छोड़ दोगे। **तो भी मैं अकेला नहीं हूं, क्योंकि पिता मेरे साथ है।**"

आज के आधुनिक संसार में तनाव यह शब्द हर किसी की जुबान पर है। लगता है कि सभी के पास यह बहुत ज्यादा है। एक शिष्य तनाव से कैसे निपटता है?

यीशु तनाव से कैसे निपटे यह हमें क्रूस के पास सीखने को मिलता है।

अपनी हत्या के दिन करीब आते और क्रूस पर जाने का दिन असीम तनावों से भरे थे।

उनका एक विश्वासयोग्य दोस्त उन्हें धोखा देता है, उनके करीबी दोस्त उन्हें पहचानने से इनकार करते हैं, उनके पीछे चलने वाले लोग उनको अकेला छोड़ देते हैं।

तनाव के अनेक पर्यायवाची शब्द हैं - चिन्ता, परेशानियां, चिड़चिड़ाहट, अधैर्य जिनका सामना हम हर दिन करते हैं।

लेकिन ऐसी कोई बात हमें यीशु में दिखाई नहीं देती है।

उन्हें यह योग्यता किसने दी? उन्होंने तनाव पर काबू कैसे पाया?

यूहन्ना 16: 31-32 में यीशु ने यह जान लिया कि वो अकेले नहीं हैं। तनावपूर्ण समयों में उनके साथी स्वयं परमेश्वर थे।

हमारे तनावपूर्ण और निराशा के समय हमारा साथी कौन है?

तनाव में न पड़ने का एक ही रहस्य है - विश्वास।

यीशु ने यह जाना और विश्वास किया कि, "**मैं अकेला नहीं हूँ।**" आपके बारे में क्या?

यीशु ने तनाव की दुष्टात्माओं को अपने जीवन में परमेश्वर की उपस्थिती के द्वारा दूर किया।

परमेश्वर यीशु के साथ थे और हमारे साथ भी हैं। हम भी तनाव और पाप पर विजय प्राप्त कर यह कह सकते हैं कि, "**मैं अकेला नहीं हूँ**"।

आगे के अध्ययन के लिये: रोमियों 8:28-29; 2कुरू. 1:3-11,4:7-12; फिली. 4:4-7; इब्रानियों 13:5-6.

27 पुनरूत्थान - कभी न भूलना

2तिमुथियुस 2:8 याद रखो कि "यीशु मरे हुओं में से जिलाए गए"।

याद रखना आसान नहीं है। हम अपने बच्चों को याद दिलाते रहते हैं और वो आसानी से भूल जाते हैं। हम हर दिन कुछ ना कुछ भूल जाते हैं।

परमेश्वर ने हमें ऐसा बनाया है। वो जानते हैं कि हम आसानी से और तुरन्त भूल जाते हैं।

हर रविवार को प्रभु भोज हमें याद दिलाता है कि यीशु ने हमारे लिये क्रूस पर क्या किया। हमारे जीवन के हर एक पल हमें यह याद रखना चाहिये कि पुनरूत्थान ने हमारे लिये क्या किया।

उसके द्वारा हमें एक नया जीवन मिला है (**रोमियों 6:4**)। क्या आप मसीह के लिये वो अपना नया जीवन जी रहे हैं या फिर से आप अपने आरामदायक जीवन में लौट गए हैं?

उसके द्वारा हमें अनन्तकाल का जीवन मिला है (**1पतरस 1:3-5**)। क्या आप अपने उस उत्तराधिकार को पाने में लगे हैं या फिर अपना उत्तराधिकार आप इस धरती पर ढूंढ रहे हो?

हम इस आशा में जी रहे हैं कि यदि हम उनके साथ मृत्यु में एक हों तो एक दिन उनके साथ जीवन में एक होंगे।

"यीशु मरे हुओं में से जिलाए गए", इस बात को कभी मत भूलो। दुखों के बीच, पीड़ा के बीच, संघर्षों के बीच, परीक्षाओं और चुनौतियों के बीच...मत भूलो। कभी मत भूलो।

आगे के अध्ययन के लिये: यशायाह 53:10-11; रोमियों 8:5-11; 1कुरू. 15.

28 आनन्द - आनन्द से चकित न होना

इब्रानियों 12:2-3- "आओ हम विश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु की ओर ताकते रहें, जिस ने अपने सम्मुख रखे हुए आनन्द के लिये क्रूस का दुख सहा। यीशु ने उसकी लज्जा की कुछ चिन्ता न की, और सिंहासन पर परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठ गए। इसलिए यीशु पर ध्यान करो, जिन्होंने पापियों का इतना विरोध सहा ताकि तुम निराश होकर साहस न छोड़ दो।"

जब हम संघर्षों में और दुखों से घिरे हैं तो हम आनन्दित कैसे रहेंगे? जब परिस्थितियां कठीन हो तो आनन्द हमसे कोसों दूर भागता है।

क्रूस के कदमों में हम सचे आनन्द का रहस्य सीखते हैं।

यीशु के कई मित्रों ने क्रूस पर यीशु का इनकार किया, उनका स्वास्थ्य बिगड़ गया था, और जहां समृद्धि की बात आती है तो यीशु के शरीर पर जो कपड़े थे उनको आपस में बांटने के लिये चिट्ठियां डाली गईं, उनका मजाक उड़ाया और उनकी हत्या की जा रही थी; वहां पर कोई महिमा नहीं पर शर्मिन्दगी थी।

इसके बावजूद यीशु का हृदय आनन्द से भर गया क्योंकि वो जानते थे कि उनके लिये आगे क्या रखा गया है। वो जानते थे कि सब कुछ परमेश्वर के नियंत्रण में है।

जब हम परमेश्वर की जगह ले लेते हैं; तो हम सब बातों के नतीजे हमारे नियंत्रण में रखना चाहते हैं; और हम चाहते हैं कि सबकुछ हमारी इच्छा के अनुसार हो, और तब ही हम अपना आनन्द खो देते हैं।

परमेश्वर की योजना और सुरक्षितता को अपनाने के कारण यीशु के लिये स्वतंत्रता और शान्ती का आनन्द उत्पन्न हुआ। पृथ्वी पर अपने जीवन के अन्तिम दिनों में यीशु ने प्रार्थना किया कि उनके शिष्य यीशु के आनन्द को अपने में पूरा-पूरा पाएं।(**यूहन्ना 17:13**)

यदि हमारे पास यीशु का यह आनन्द नहीं है तो हम कटु, निन्दक बनते और हममें विश्वास की कमी हो जाती है।

जब मैं परमेश्वर में विश्वास नहीं करता तब मैं चिन्ता और आलोचना करने लगता हूँ,। और निराशा से भर जाता हूँ।

एक विश्वासी हृदय से आभारपन उत्पन्न होता है और आनन्द को जन्म देता है। आप उन चिजों की सूचि बना सकते हैं जिनके प्रति आप आभारी हो या फिर ऐसे लोगों और वस्तुओं की सूचि बना सकते हैं जो आपको पसन्द नहीं हैं।

आनन्द पवित्र आत्मा का एक फल है और जैसे आप परमेश्वर में विश्वास करते हो तो वह तुम्हें आत्मा के इस फल से भरने के इंतजार में रहता है। (**रोमियों 15:13**)।

यशायाह 53:11 कहता है, "वह अपने प्राणों का दुख उठाकर उसे देखेगा और तृप्त होगा"।

आज कौनसी बात आपका आनन्द छीन रही है? आनन्द की कमी के लिये आपके पास कौनसा बहाना है? अपने जीवन में आनन्द की कमी का दोष क्या आप परिस्थितियों पर लगा रहे हैं?

क्रूस पर लटके यीशु पर अपनी आंखें लगाओ। वह तुम्हें सच्चा आनन्द पाना, भरोसा रखना, और आभारी रहना सीखाएंगे।

आगे के अध्ययन के लिये: अय्यूब 6:10; भ.सं. 5:-11, 19:8, 28:7, 51:12; यूहन्ना 15:11, 16:20-22, 17:13; रोमियों 8:18, 14:17; 2कुरू.8:2; 1थिस्स. 1:6; याकूब 1:2.

29 मेल-मिलाप - मेल-मिलाप में मग्न

इफिसियों 2:14-16- "यीशु ही हमारी शान्ति है। उन्होंने दोनों को एक कर लिया, और अलग करनेवाली दीवार को जो बीच में थी, ढाह दिया। यीशु ने अपने शरीर में बैर अर्थात् व्यवस्था को उसकी आज्ञाओं तथा नियमों के साथ मिटा दिया ताकि दोनों से अपने में एक नया मनुष्य उत्पन्न करके मेल-शान्ति स्थापित करे और क्रूस पर बैर को नाश करके उसके द्वारा दोनों को एक देह बनाकर परमेश्वर से मिलाए।"

आज इस संसार में हम जो देखते हैं वो परमेश्वर से हमारे दूर होने का एक प्रतिबिम्ब है। लोगों और परमेश्वर के बीच में जितनी ज्यादा दूरियां बढ़ेंगी उतना ही ज्यादा विरोध और दुश्मनी भी बढ़ेगी। भेद-भाव, घृणा, तलाक, हींसा यह सब परमेश्वर से दूर होने के फल हैं।

परमेश्वर हमेशा मेल-मिलाप चाहते हैं। मेल-मिलाप कराने के परमेश्वर की इच्छा का सबसे महान प्रदर्शन है क्रूस।

मेल-मिलाप में रूकावट किस बात के कारण आती है - क्या वह घमण्ड नहीं जो दूसरों में दोष ढूंढता है? हमें क्रूस के द्वारा यह दिखाई देता है कि यीशु यह इच्छा है कि सबसे नीच मनुष्यों का भी मेल-मिलाप परमेश्वर से करवाएं - ("हे पिता इन्हें क्षमा कर क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं")। यदि उन्हें दोष ढूंढना होता तो हमारे लिये कभी अपना प्राण न देते।

मनुष्य अपने घमण्ड के कारण दूसरों और परमेश्वर में दोष ढूंढता है (याद है, कैसे आदम ने पाप में गिरने का कारण हव्वा को उसके जीवन में डालने का दोष परमेश्वर पर लगा कर अपना मतलब साधा)। मेल-मिलाप तब ही होता है जब दीन स्त्री या पुरूष दीन परमेश्वर से मिलते हैं।

यीशु की नजरों से देखना; बस यही एक तरीका है झगड़ों को मिटाने का। क्या मेल-मिलाप आपके लिये किसी भी दूसरी बातों से बढ़कर महत्वपूर्ण होगा?

हमारे अन्दर **1कुरून्थियों 6:7** के समान आत्मा होना चाहिये- अच्छा होगा कि यीशु के शरीर में झगड़ा करने के बजाए हम धोखा और बुरा बर्ताव सह लें।

क्रूस पर भी यीशु का हृदय मेल-मिलाप से भरा था। क्या परमेश्वर और मनुष्य दोनों के सामने अपने आपको दीन बनाने का जुनून आप में है?

आगे के अध्ययन के लिये: मत्ती 5:23-24; 1कुरू. 6:1-11;गलातियों 6:1-2; इफि. 4:31-32; 1पतरस 1:22-23.

30 एकता - समानान्तर - एक मन

यूहन्ना 17:20-21- "मैं केवल इन्हीं के लिये प्रार्थना नहीं करता परन्तु उनके लिए भी प्रार्थना करता हूं, जो इनके वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे कि वे सब एक हों। जैसा तू, हे पिता, मुझमें है, और मैं तुझ में हूं वैसे वे भी हम में हों जिस से संसार विश्वास करे, कि तू ही ने मुझे भेजा है।"

परमेश्वर चाहते हैं कि उनके लोग एकता में रहें। क्रूस यह स्पष्ट करता है कि एकता लाने के लिये परमेश्वर किस हद्द तक जा सकते हैं।

सांसारिक और अधार्मिक महत्वाकांक्षाओं के लिये भी लोग एकता में आ जाते हैं (**उत्पत्ति 11 बेबीलोन की मीनार**)।

शिष्यों के बीच में एकता, संसार के लिये यीशु की गवाही है।

एकता में कौन-कौनसी अड़चनें आती हैं? गलतफहमी, स्वार्थी महत्वाकांक्षा, प्रतियोगिता, जलन और ईर्ष्या, असुरक्षितता, हीनता, कृतघ्नता, कड़ुवाहट।

हमारी एकता को तोड़ने का एक मात्र कारण है पाप - क्षमा एक मात्र उपाय है।

क्षमा का प्रदर्शन क्रूस से बेहतर और कहां हो सकता है?

एकता गतिशील है। उसे हमेशा नया बनाते जाना है।

आपके अनुसार आप अपने - पति-पत्नी, बच्चे, कलीसिया के भाई या बहन, आपकी काम की जगह पर कोई, आपके रिश्तेदार इनसे एकता में क्यों नहीं रह पाते?

रिश्तों के बारे में परमेश्वर और मनुष्यों के सामने क्या आपका विवेक स्पष्ट है?

क्या एकता बनाए रखने के लिये हरएक प्रयत्न कर रहे हैं?

हमारे साथ जो भी लोग हैं उनके साथ प्रेम और एकता का रिश्ता बनाए रखने के लिये जिस भी चीज की आवश्वक्ता होती है वह सब यीशु का उदाहरण और उनका लहू हमें प्रदान करता है।

आगे के अध्ययन के लिये: यूहन्ना 17; 1कुरू. 1; इफि. 2, 4:1-13; फिलि. 2:1-18.